श्रीः ।

रामचन्द्रभूषण ।

साहित्यविषयक अलङ्कारका अपूर्वग्रंथ ।

परब्रह्म परमेश्वर नरतनुधारी अवध
विहारी श्रीमहाराज रामचन्द्रजीके
प्रीत्यर्थ श्रीयुत लछिरामकवि
श्रीअवध (अयोध्याजी)
निवासीने रचना
किया ।

और

मसवानपुर जिला कानपुर निवासी श्रीलालताप्रसादात्मज
गौरीशङ्करभट्ट सदाव्रती अटसेलाद्वारा प्राप्तकर,
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बंबई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्धकिया ।

मार्गशीर्ष सं० १९६०, शके १८२५.

मुद्रणाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" प्रेसाध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.